AN INTERNATIONAL CONFERENCE ON
Humanities, Science & Research
At Asha Girls College, Panihar chack, Hisar (Haryana)
27-28th January, 2024

सिंधु घाटी सभ्यता के धार्मिक जीवन का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में स्वरूप

Dr. Rajkumar, Assistant Professor, Department of History, Seth G.L. Bihani S.D. Post Graduate, Sriganganagar

सारांश

प्राचीन सिंधु घाटी सभ्यता के धार्मिक जीवन की विशेषताओं का विश्लेषण करता है तथा यह दर्शाने का प्रयास करता है कि इन धार्मिक परंपराओं और विश्वासों का प्रभाव वर्तमान भारतीय समाज, संस्कृति और धार्मिक व्यवहारों में किस प्रकार देखा जा सकता है।

सिंधु घाटी सभ्यता (लगभग 2500–1900 ईसा पूर्व) के पुरातात्विक साक्ष्य—जैसे मोहरें, मूर्तियाँ, अग्निकुंड, स्नानागार, और यज्ञवेदियाँ—धार्मिक जीवन की संरचना और मान्यताओं की झलक प्रदान करते हैं। विशेष रूप से, पुरुष देवता (पशुपति महादेव के प्रारंभिक रूप में), मातृदेवी, प्रकृति पूजा, पवित्र पशु-पक्षियों का सम्मान, और जल की शुद्धता जैसे तत्व आज भी हिन्दू धार्मिक आस्था में प्रमुख रूप से विद्यमान हैं।

शोध में यह भी विचार किया गया है कि कैसे सिंधु सभ्यता में धर्म न केवल आध्यात्मिक आस्था का विषय था, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का भी अभिन्न अंग था। नगर नियोजन में स्नानागारों और जल प्रबंधन प्रणालियों की उपस्थिति यह दर्शाती है कि शुद्धता, पवित्रता, और नियमित अनुष्ठान उस समय के धार्मिक जीवन के मूल आधार थे।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में, यह शोध इस बात पर प्रकाश डालता है कि सिंधु सभ्यता के धार्मिक तत्त्वों की निरंतरता भारतीय संस्कृति की स्थायित्वशीलता और गहराई को दर्शाती है। अनेक आधुनिक धार्मिक प्रथाएँ—जैसे शिव की उपासना, मातृदेवी पूजन, योग और ध्यान की प्रवृत्ति—उसी सांस्कृतिक-सांस्कृतिक परंपरा की उत्तरजीविता को दर्शाती हैं।

महत्वपूर्ण शब्द: सिंधु घाटी सभ्यता, धार्मिक जीवन, मातृदेवी, पशुपति, पुरातत्व, वर्तमान परिप्रेक्ष्य, भारतीय संस्कृति, धार्मिक निरंतरता।

Quality Of Work... Never Ended...